आईसीएआर-आईवीआरआई, मुक्तेश्वर द्वारा 'खेत बचाओ अभियान' के अंतर्गत दो जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-आईवीआरआई), मुक्तेश्वर द्वारा *'खेत बचाओ अभियान'* के अंतर्गत मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, प्राकृतिक खेती एवं टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दो जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों का आयोजन संस्थान के कार्यवाहक संयुक्त निदेशक डॉ. शेर सिंह के मार्गदर्शन एवं पर्यवेक्षण में किया गया तथा कार्यक्रमों का समन्वय डॉ. मनीष तोमर ने किया।

किसानों को मृदा स्वास्थ्य एवं जैविक खेती के प्रति किया जागरूक

पहला जागरूकता कार्यक्रम किसानों के लिए आयोजित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्थान के कार्यवाहक संयुक्त निदेशक डॉ. शेर सिंह ने कहा कि सरकारी योजनाओं एवं अभियानों के अंतर्गत आयोजित ऐसे जागरूकता कार्यक्रमों का उद्देश्य किसानों को मृदा स्वास्थ्य के संरक्षण और टिकाऊ कृषि पद्धतियों के प्रति जागरूक करना है। उन्होंने किसानों को खेतों की उर्वरता बनाए रखने के लिए गोबर की खाद (FYM), जैविक खेती तथा अन्य पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि इन उपायों से मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करने तथा कृषि उत्पादन को दीर्घकाल तक टिकाऊ बनाए रखने में सहायता मिल सकती है।

कार्यक्रम के दौरान किसानों ने संस्थान की **वर्मी कम्पोस्ट इकाई** का भ्रमण भी किया। इस दौरान उन्हें केंचुआ खाद तैयार करने की प्रक्रिया तथा मृदा स्वास्थ्य सुधारने के लिए जैविक खाद के उपयोग की जानकारी दी गई। किसानों को फसल उत्पादन में जैविक संसाधनों के महत्व और मृदा संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया।

232 विद्यार्थियों ने किया संस्थान का भ्रमण, प्राकृतिक खेती पर व्याख्यान आयोजित

दूसरे कार्यक्रम के अंतर्गत **232 विद्यार्थियों ने आईसीएआर-आईवीआरआई, मुक्तेश्वर का भ्रमण किया।** भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों को संस्थान की विभिन्न इकाइयों का अवलोकन कराया गया तथा संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों और कार्यप्रणाली से परिचित कराया गया।

इस अवसर पर डॉ. मनीष तोमर ने विद्यार्थियों को *'प्राकृतिक खेती एवं खेत बचाओ अभियान'* विषय पर जागरूकता व्याख्यान दिया। उन्होंने मृदा संसाधनों के संरक्षण, मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने, जैविक अवशेषों के पुनर्चक्रण तथा प्राकृतिक एवं टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण और भविष्य की कृषि आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के प्रति जागरूक किया।

इन दोनों कार्यक्रमों का उद्देश्य किसानों एवं विद्यार्थियों में मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, जैविक खाद के उपयोग, प्राकृतिक खेती और टिकाऊ कृषि पद्धतियों के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का संदेश दिया गया।